प्रकाशनार्थ 04 मई 2016, प्रभु प्रेमी संघ कुंभ शिविर उज्जैन

।। सर्वधर्म सदभाव स्वच्छता सम्मलेन ।।

04 मई, उज्जैन । जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित प्रभु प्रेमी संघ शिविर में आज दिनांक 4 मई को सर्वधर्म सदभाव स्वच्छता सम्मलेन हुआ जिसमे निवृतमान शंकराचार्य पद्म भूषण स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि जी महाराज की पावन उपस्थिति में पूज्य स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज, स्वामी चिदानंद सरस्वती जी महाराज, स्वामी हरिचेतनानंद गिरि जी, अकाल तख़्त के मुख्य जत्थेदार ज्ञानी गुरबचन सिंह जी, जैन संत लोकेश मुनि जी, आल इंडिया इमाम कौंसिल के इमाम उमर इलियासी जी, महाबोधि इंटरनेशनल सेंटर लेह के अध्यक्ष वेन भिक्खु संघसेना जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक इंद्रेश कुमार जी, बिशप सेबेस्टियन वडाकेल जी, ब्रम्हकुमारी वीणा बहन जी, वैष्णवाचार्य पुंडरिक गोस्वामी जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया । सभी अतिथियों का शब्दों से स्वागत शिविर संरक्षक पुरुषोत्तम अग्रवाल द्वारा किया गया। सम्मलेन में प्रस्तावना रखते हुए परमार्थ निकेतन के परमाध्यक्ष एवं कार्यक्रम संयोजक स्वामी चिदानंद सरस्वती जी ने कहा कि भारत की संस्कृति महान है सर्वधर्म सदभाव ही भारत का जीवन दर्शन है हमारे पास हिमालय सी ऊंचाई रखने वाले, गंगा सा पावित्र्य रखने वाले महापुरुष हुए है आज आवश्यकता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए, स्वच्छता हेतु हम सभी मिलजुल कर प्रयास करे जिससे आने वाला भविष्य उन्नत हो पाए। निवृतमान शंकराचार्य पद्म भूषण स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि जी महाराज ने कहा कि जब हम नदियों के जल में स्नान करते है उसका उपयोग करते है तो वह हमसे यह नहीं पूछती कि आप किस जाति के है किस पंथ के है किस धर्म के है। भारत को उन्नत प्रगति के लिए कुछ वर्षों तक हमें यह भूलना होगा हम कौन है । जब शासक, प्रशासक और सन्यासी एक हो जाते है तो वहां आनंद ही आनंद होता है । देश को स्वच्छ बनाओ, प्रेम से रहो, विश्वास बढाओ और मिलजुल कर सामूहिक प्रयास करो। पूज्य स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज ने सम्मलेन को संबोधित करते हुए कहा सिंहस्थ भारत की एकता, अखंडता, संप्रभुता, समरसता का महापर्व है, इस कुंभ से एक क्रांति की शुरुआत हो सकती है जो वृक्ष संरक्षण पर आधारित हो, वृक्ष से बड़ा परमार्थी और कोई नहीं है वर्षा आव्हान से लेकर मृदा संरक्षण तक वृक्ष करते है। हर व्यक्ति के मन में मेरा नगर, मेरा तीर्थ के साथ स्वच्छ घर, गली, गाँव, देश की भावना होना चाहिए। इस सूत्र का पालन करें तो देश की दशा और दिशा बदल सकती है। जैसा सम्मान हम तीर्थ को देते हैं वैसा ही सम्मान हमें शहर को देना चाहिए। जैसे मंदिर की सीढियों की सफाई होती है वैसे ही सफाई हमें हमारे घर, गांव और शहर की करना चाहिए। हमारी चेष्टाएँ पारमार्थिक हो हम सभी साथ मिलकर इस ओर कदम बढ़ाये। कार्यक्रम को ज्ञानी गुरबचन सिंह जी, उमर इलयासी जी, लोकेश मुनि जी, भिक्खु संघसेना जी, इंद्रेश कुमार जी, बिशप सेबेस्टियन वडाकेल जी ने भी संबोधित किया । साथ ही सभी ने मिलकर वृक्ष संरक्षण एवं स्वच्छता का संकल्प भी लिया। प्रभु प्रेमी संघ शिविर की अधिशासी प्रभारी पूज्या महामंडलेश्वर स्वामी नैसर्गिका गिरि जी ने आभार ज्ञापित किया। पूरे कार्यक्रम में बड़ी संख्या में जनसमूह उपस्थित रहा।

।। रास पंचाध्यायी ।।

जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित प्रभु प्रेमी संघ शिविर में श्री कृष्ण की दिव्य लीला पर आधारित रास पंचाध्यायी के तृतीय दिवस श्रीमन्माधवगौड़ेश्वर वैष्णवाचार्य श्री पुंडरिक गोस्वामी जी महाराज ने रससिद्ध विश्लेषण करते हुए कहा श्री कृष्ण चिदानंदघन दिव्यशरीर हैं, गोपियाँ दिव्य जगत् की भगवान की अतंरंग शक्तियाँ हैं। उनकी लीला भावभूमि की है स्थूल शरीर और मन से उसका कोई संबंध नहीं। रास पंचाध्यायी का महत्व प्रेमलक्षणा भक्ति के संदर्भ में बहुत माना जाता है सूरदास के राधा और कृष्ण प्रकृति और पुरुष के प्रतीक हैं और गोपियाँ राधा की अभिन्न सखियाँ हैं। राधा कृष्ण के सबसे निकट दर्शाई गई हैं, किंतु अन्य गोपियाँ उनसे ईर्ष्या नहीं करतीं। वे स्वयं को कृष्ण से अभिन्न मानती हैं। भागवत की प्रेरणा लेकर पुराणों में गोपी-कृष्ण के प्रेमाख्यान को आध्यात्मिक रूप दिया गया है।

"ता मन्मनस्का मत्प्राणा मदर्थे त्यक्तदैहिका:। मामेव दयितं प्रेष्ठमात्मानं मनसा गता:॥"

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं- "उन गोपियों का मन मेरा मन हो गया है ; उनके प्राण, उनका जीवनसर्वस्व मैं ही हूं। मेरे लिये उन्होंने अपने शरीर के सारे सम्बन्धों को छोड़ दिया है। उन्होंने अपनी बुद्धि से केवल मुझको ही अपना प्यारा , प्रियतम और आत्मा मान लिया है।"

सर्वेश्वर की वह प्रेमाधीनता , भक्तवश्यता देखने ही योग्य थी , किंतु इन वात्सल्यवती गोपिकाओं की अपेक्षा भी निर्मलतर, निर्मलतम प्रेम का निर्दशन व्यक्त हुआ मधुभाव से श्रीकृष्णचन्द्र के प्रति आत्मनिवेदन , सर्वसमर्पण करने वाली श्रीगोपीजनों में। ब्रज की इन गोपकुमारिकाओं का, गोपसुन्दरियों का श्रीकृष्णप्रेम जगत अनादि इतिहास में सर्वथा अप्रतिम बना रहेगा। प्रेम की जैसी अनन्यता इनमें हुई और फिर सर्वथा निर्बाध भगवत्सेवा का जो अधिकार इन्हें प्राप्त हुआ, यह अन्यत्र कहीं है ही नहीं। व्यास पूजन शिविर संरक्षक एवं मुख्य यजमान पुरुषोत्तम अग्रवाल जी द्वारा किया गया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन उपस्थित थे । 2 मई से प्रारंभ हुई कथा 6 मई 2016 तक चलेगी समय दोपहर 3 बजे से सायं 6 बजे तक है।

।। रिवर डांस एवं पपेट शो ।।

जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित प्रभु प्रेमी संघ शिविर उज्जैन के सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मंच पर 5 मई को प्रख्तात भजन गायक श्रद्धेय नंदू भैय्या की भजन संध्या होगी। जो रात्रि 8 बजे से प्रारंभ होगी।

मीडिया सेल, प्रभु प्रेमी संघ शिविर

उजरखेड़ा, भूखीमाता चौराहे के पास, बड़नगर रोड, उज्जैन